

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीरराहपुराणे रैड्य रिरचितम्
॥ श्री गदाधरस्तोत्रम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्री गदाधरस्तोत्रम् ॥

रैभ्य उराच

गदाधरं विबुधजनैरभिष्टुतं

धृतक्मं स्फुडितजनाहर्तिनाशनम्।

शिरं विशालासुर सैन्यमर्दनं

नमाम्यहं हतसकलाहशुभं स्मृतौ ॥ 1 ॥

पुराणपूरं पुरुषं पुरुष्टुतं

पुरातनं रिमलमलं नृणां गतिम्।

त्रिरिक्रमं हतधरणिं बलोज्जितं

गदाधरं रहसि नमामि केशरम् ॥ 2 ॥

विशुद्धभारं विभरैरुपारुतं

प्रियारुतं रिगतमलं रिचक्षणम्।

स्फितीश्वरैरपगतकिल्बिषैः स्तुतं

गदाधरं प्रणमति यः सुखं रसेत् ॥ 3 ॥

सुरासुरैरर्चितपादपङ्कजं

केयूरहाराङ्गदमौलिधारिणम्।

अक्लौ शयानं च रथाङ्गपाणिनं

गदाधरं प्रणमति यः सुखं रसेत् ॥ 4 ॥

सितं कृते त्रैतयुगेहरुणं विभुं

तथा तृतीये नीलसुरर्णमद्युतम्।

কলৌ যুগেহলিপ্রতিমং মহেশ্বরং
গদাধরং প্রণমতি যঃ সুখং রসেৎ ॥ 5 ॥

বীজোদ্ভরো যঃ সৃজতে চতুর্মুখং
তথৈব নারাষণরূপতো জগৎ।
প্রপালযেদ্রদ্রপুস্তথাহন্তকৃৎ
গদাধরো জযতু ষডর্ধমূর্তিমান্ ॥ 6 ॥

সংরং রজশৈচর তমো গুণাস্ত্রযঃ
ৎরেতেষু রিশ্বরস্য সমুদ্ভরঃ কিল।
স চৈক এর ত্রিরিধো গদাধরো
দধাতু ধৈর্যং মম ধর্মমোক্ষযোঃ ॥ 7 ॥

সংসারতোষার্ণরদুঃখতন্তুভিঃ
রিযোগনক্রক্রমণৈঃ সুভীষণৈঃ।
মজ্জন্তুমুচৈঃ সুতরাং মহাপ্লরো
গদাধরো মামুদধৌ তু যোহতরৎ ॥ 8 ॥

স্বয়ং ত্রিমূর্তিঃ খমিরাত্মনাত্মনি
স্বশক্তিতশ্চাণ্ডমিদং সসর্জ হ।
তস্মিঞ্জলোখাসনমাপ তৈজসং
সসর্জ যস্তং প্রণতোহস্মি ভূধরম্ ॥ 9 ॥

মৎস্যাদিনামানি জগৎসু চাম্বুতে
সুরাদিসংরক্ষণতো বৃষাকপিঃ।
মুখস্বরূপেণ স সন্ততো রিভুঃ
গদাধরো মে রিদধাতু সদগতিম্ ॥ 10 ॥

এতচ্চ বৈভ্যনির্দিষ্টং
স্তোত্রং বিশেষগর্গদাভূতঃ।

यः पठेत्स गद्यां गत्रा
पिण्डानाद्विशिष्यते ॥ 11 ॥

॥ श्री गदाधरसुत्रं समाप्तम् ॥